10·2

...लकत्ता, पटना। ३

६—श्री...	रामेश्वर चौमुआल	।।।)
७—सज्जाद संम्बुल	केशवराम भट्ट	१।।)
८—नीलदेवी	"भारतेन्दु"	१)
९—मुद्राराक्षस	"	२।।।)

साहित्य, समालोचना व निबन्ध

१—रामचरित मानस की भूमिका	रामदास गौड़	५)
२—हिन्दी साहित्य विमर्श	'बख्शी'	२।)
३—हिन्दी साहित्य की झाँकी	यदुनन्दन मिश्र	२)
४—जिज्ञासा	पं० ब्रजभूषण लाल	१।।)
५—मुहावरे और लोकोक्तियाँ	गिरीशचन्द्र जोशी	१।।।)
६—साहित्य शिरोमणि	वी० एल० शर्मा	१।।।)
७—हिन्दी काव्यालंकार प्रवेशिका	अनूपलाल मंडल	२)
८—हिन्दी मुहावरे.	ब्रह्मस्वरूप दिनकर शर्मा	६)
९—साहित्य चर्चा	प्रो० ललिताप्रसाद सुकुल	१।।)
१०—ज्ञानभारती	महावीर प्रसाद द्विवेदी	१।।।)
११—हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार	ठाकुर प्रसाद सिंह	२)
१२—निबन्ध नवनीत I	श्री कमलेश	१।।=)
१३— " " II	"	३।)
१४—उच्चतर माध्यमिक पथ प्रदर्शिका	श्री कमलेश तथा श्री गोपालजी दूबे	३)

कविता

१—श्रीकृष्ण उपदेश	जगदीश नारायण तिवारी	१।)
२—कवियों की ठिठोली II	रमाकान्त त्रिपाठी	१।।)
३—काव्यांजलि	विश्वनाथ त्रिपाठी 'कवि०'	१)
४—सचित्र मारवाड़ी गीत संग्रह	एक जानकार	५)
५—सुमनाञ्जलि	केदारनाथ अवस्थी	२)
६—मारवाड़ी गीत संग्रह चार भाग	... . प्रत्येक	।)
७—मौलाना रूम उनका काव्य	जगदीश वाचस्पति	१।।)
८—रजनी	[illegible]	।।=)

९—वीणा-झंकार	'विमल'
१०—संगीत गीतांजली	रविन्द्रनाथ टैगोर
११—हिमांशु	श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'

ऐतिहासिक और राजनैतिक

१—देशभक्त मेजिनी के लेख	छविनाथ पाण्डेय
२—पंजाब हरण	नन्दकुमारदेव शर्मा
३—गदर का इतिहास दूसरा भाग	शिवनारायण द्विवेदी
४—रूस का पंचायती राज्य	प्राणनाथ विद्यालंकार
५—रूस में युगांतर	विश्वम्भरनाथ जिज्जा
६—भारतीय शासन परिचय	परमेश्वरीलाल गुप्त
७—तिब्बत में तीन वर्ष	यात्री इकाई कावागुची
८—सुयेनचांग का भारत भ्रमण	जगमोहन वर्मा
९—प्रजा के अधिकार	देशभक्त सत्यमूर्ति
१०—नेताओं की वार्थयात्रा	सी० एफ० एन्ड्रूज़
११—कांग्रेस का जन्म व विकास	सिद्धनाथ माधव
१२—गान्धी बाबा का चरित्र	रामदास गौड़
१३—महात्माजी वस्त्रव्यवसायी	हरमुखराय
१४—स्वदेशाभिमान में बलिदान	हरिदास माणिक
१५—स्वराज्य की माँग	श्रीराम बेरी
१६—तरुण के स्वप्न	नेताजी सुभाषबोस
१७—हमारा कर्त्तव्य	"
१८—व्यक्ति और राज	सम्पूर्णानन्द
१९—छात्र और समाज सेवा	केशव पाण्डेय

व्यवसाय और उद्योग धन्धा

१—वाणिज्य व्यवसाय प्रवेशिका	शिवसहाय चतुर्वेदी
२—दर्जी (सिलाई कटाई शिक्षक)	उपेन्द्रनाथदास गुप्ता
३—सूई शिल्प शिक्षा	"
४—रुपया कमाने की मशीन	राधाकृष्ण गुप्त
५—तीसी	छविनाथ पांडे बी० ए०
६—धुलाई रङ्गाई विज्ञान	शिवचरण पाठक
७—व्यापार संगठन	गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक'

श्री

भजन नारायणी

अर्थात्

स्त्री दर्पण

संग्रह कर्ता और प्रकाशक-

लाला बाबूलाल बुकसेलर

मन्दिर प्रयागनारायण कानपुर.

दसवीं बार ८०००] सन् १९२१ ई०. [मु० -)॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

भजन नारायणी

अर्थात्

स्त्री दर्पण

—:※:—
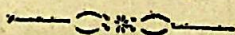
ग़ज़ल–ईश्वर प्रार्थना

नाथ क्यों रूठे हो हम से क्या मेरी तकसीर है।
फिर तुम्हारे रीझने की कौन सी तदबीर है॥
किस लिये मारा फिरूं मैं तेरे दर्शन के लिये।
दिल मेरा मन्दिर है तेरा ध्यान ही तसवीर है॥
एक राधा पर ही तूने कर दिया जादू नहीं।
जिस सखी को देखिये वैठी वही दिलगीर है॥
था मरज दुनियां को जिसको होगई दम में शफ़ा।
उस प्रभू के नाम का नुस्ख़ा बड़ा अकसीर है॥
किस तरह पीछा छुड़ाऊं तुमहीं बतला दो मुझे।
हो रही माया जगत की नाथ दामनगीर है॥

जिस किसी का प्रेम उस से है अटल प्रह्लाद सा।
क्या उसे जल्लाद सूली क्या उसे शमशीर है ॥
इस तरह के पाप करके और इनकी मुक्ति हो।
झूठ है "आनन्द" की ऐसी कहां तक़दीर है ॥

ग़ज़ल--राधिका का कहना कृष्ण के बिषय

याद में घनश्याम के यह दिल दिवाना हो गया।
गम उठाना फिक्र खाना जान जाना हो गया ॥
दोस्ती करके मज़ा दो रोज भी पाया नहीं।
हँसी के बदले में अब आंसू बहाना हो गया ॥
मौज कर कुबिजा से वह पाती लिखें मोहि योग को।
जान कर बिन आग मुझको जी जलाना हो गया ॥
एक दिन वह था बुलाते थे मुझे बंशी बजा।
हाय अब दर्शन का भी दुशवार पाना हो गया ॥
पहिले तो शृङ्गार रच रच करते थे निज हाथ से।
खाक मलने के लिये अब योग बताना हो गया ॥
है मेरी तक़दीर बिगड़ी दोष उनको क्या मैं दूं।
ईश्वर क्या अब एकदम उल्टा ज़माना हो गया ॥

——

ग़ज़ल—स्त्री शिक्षा पर

ऐ मेरी बहना सदा तुम जानकी सी नार हो ।
कष्ट सहने को पती के साथ तुम तैयार हो ॥
राम श्यामल जानकी गोरी हैं जैसे चन्द्रमा ।
देखना क्या रूप का पी पर सदा बलहार हो ॥
फूल झड़ते हैं सदा मुख से सिया की बात में ।
फिर किसी से जानकी की किस तरह तकरार हो ॥
दुःख में बन जाओ पत्थर जिस तरह सीता बनी ।
पंखरी लाख बहिनों तुम मेरी सुकुमार हो ॥
क्या मजाल है जो सिया पतिधर्म अपना छोड़ दे ।
लाज ना आवे भले ही शीस पर तलवार हो ॥
जब चले बन राम तो सीता ने रो रो कर कहा ।
प्राणप्यारे सर है हाज़िर जब कभी दरकार हो ॥
जिस तरह श्रीराम को प्यार करती जानकी ।
इस तरह बहिनों तुम्हारा भी पती से प्यार हो ॥
गर कहा "आनन्द" का मानों बनों तुम जानकी ।
फिर मेरी बहिनों तुम्हारी क्यों न जै जै कार हो ।
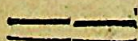
ग़ज़ल--अनुसूया का सीता जी की बड़ाई करना

सिया सी आज तीनों लोक में भी नार न होगी ।
चतुर, पतिव्रत, सुन्दर, लाड़ली, सुकुमार न होगी ॥
तपिश है सर पै सूरज की पड़े पैरों में छाले हैं ।
बताओ ऐसे कष्ट से कौन बेज़ार न होगी ॥
निरखती राम की छवि को चकोरी चन्द्रमा जैसे ।
पती का और इस विधि देखती दीदार न होगी ॥
सदा रघुवर के चरणों में सिया सुकुमार रहती है ।
पती को जानकी सी और करती प्यार न होगी ॥
सुखों की सेज को तज के पिया के साथ वन आई ।
उठाने को यह दुख कोई कभी तैयार न होगी ॥
लटें छूटीं फटे कपड़े मिलें फल फूल खाने को ।
सिया सी आज कोई दूसरी लाचार न होगी ॥
न होगी नार भारतवर्ष में "आनन्द" कोई भी ।
पतिव्रता सिया पर आज जो बलिहार न होगी ॥

ग़ज़ल

इतना तो करना भगवन् फिर प्राण तन से निकलें ।
हो होमरूल हासिल फिर प्राण तन से निकलें ॥
सब को स्वराज रट हो स्वाधीनता प्रकट हो ।
यह ध्यान सब के घट हो फिर प्राण तन से निकलें ॥

एक दृढ़ प्रतिज्ञा मन हो निज देश से लगन हो।
जाता चहै यह तन हो फिर प्राण तन से निकलें॥
अरजुन से हों यहां पर मोहन से हों यहां पर।
भीषम से हों यहां पर फिर प्राण तन से निकलें॥
दानी भी करण से हों ज्ञानी भी धर्म्म से हों।
मानी प्रताप से हों फिर प्राण तन से निकलें॥
आधीनता अलग हो स्वाधीन सर्व जग हो।
हम से न तू विलग हो जब प्राण तन से निकलें॥
दासत्व भार छूटे परतन्त्र पास टूटे।
"जगदीश" तू न रूठे फिर प्राण तन से निकलें॥

दादरा—स्त्री शिक्षा के विषय में

पहिनों विद्या का गहना मेरी बहना॥
मोहनमाला झूमर कँगना, झूठा है बहना सब गहना।
राधिका सीता द्रोपदी मीरा, सब देवियों ने इसे पहना॥
शील का काजल लाज का घूंघट, चरनोंमें पति के सदा रहना।
तन मन धन प्रीतम पर वारो, हो कष्ट पी को तो सहना॥
सीता सी पतिव्रता बनों तुम, बहिनों से मेरा यही कहना।
पहिनों विद्या का गहना मेरी बहना॥

———
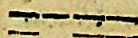
ग़ज़ल

हुये दो लाल दशरथ के मुकद्दर हो तो ऐसा हो ॥
जनकपुर में धनुष तोड़ा विवाहा जाके सीता को ।
लचाया मान भूपों का दिलावर हो तो ऐसा हो ॥
मात बनबास दे दीन्हा पिता ने प्राण को छोड़ा ।
न छोड़ा साथ लछमन ने बिरादर हो तो ऐसा हो ॥
चढ़े जगदीश लङ्का को बना कर रूप बीरों का ।
हुये लछमन नसीबेवर सिकन्दर हो तो ऐसा हो ॥
सखा सब रामचन्द्र ले उदधि तट डेरा हैं डारे ।
बनाया शेर हीरासिंह ने गुणवर हो तो ऐसा हो ।
हुये दो लाल दशरथ के मुकद्दर हो तो ऐसा हो ॥

ग़ज़ल

मुरारी जब से तुमने रस भरी बंशी बजाई है ।
न दिन को चैन पड़ती है न रतियां नींद आई है ॥
तड़फती हैं सखी गोकुल की जो तुम छोड़कर उनको ।
लगाकर प्रीति कुबरी सों वहां मथुरा बसाई है ॥
निठुर दुनियां में तुम ऐसा न कोई है न होवेगा ।
गये जिस दिन से तुम मथुरा नहीं सूरत दिखाई है ॥
सबूरी कर अरे अफ़ज़ल तसल्ली दे ज़रा दिल को ।
मिलेंगे कृष्ण जी तुमको जो तुमने रट लगाई है ॥

ग़ज़ल--काशी में सत्य हरिश्चन्द्र का विलाप

आज काशी में मेरा कोई खरीदार नहीं ।
हो खरीदार तो बिकने में है इनकार नहीं ॥
मोल जो लेवे मुझे थीस भार दे कंचन ।
मेरा इस तन से है फिर कोई सरोकार नहीं ॥
धर्म के काम में बेचूं हूं मैं अपने तन को ।
सत्य रह जाय मुझे कुछ भी तो दरकार नहीं ॥
अर्ज करता हूं मगर कोई नहीं सुनता है ।
सच तो यह है मुसीबत में कोई यार नहीं ॥
रानी तो बिक गई बिकजायगा रोहतास कुमार ।
हाथ ईश्वर के है पति मेरा कुछ अखत्यार नहीं ॥
नगर के लोग सुनें अब तो गुजारिश मेरी ।
हाय दुनियां में कोई मुझसा है लाचार नहीं ॥
सरे बाज़ार हरिश्चन्द्र खड़ा बिकने को ।
मुझ से महकूम का बनता कोई सरकार नहीं ॥
कहता जगदीश हे प्रभु टार दो इनके सङ्कट ।
ऋण के बिन दान किये भाता ये संसार नहीं ॥

लावनी-द्रोपदी का विलाप करना

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी। दुख हर
द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥ दुःशासन वंश कुठार म
दुखदाई। कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई॥ अब भ
धर्म को नाश पाप रह्यो छाई। लखि अधम सभा की ओर न
बिलखाई॥ शकुनी, दुर्योधन, करण खड़े खल घेरी। दुख०
तुम दीनन की सुधि लेत देवकी नन्दन। महिमा अनन्त भ
वन्त भक्त दुख भंजन॥ तुम किया लिया दुख दूर श
धनु खंडन। अति आरत मदन गोपाल मुनिन मन रंजन
करुणानिधान भगवान करी क्या देरी। दुख हरो०॥ तु
सुनि गयन्द की टेर विरद अविनाशी। ग्रह मारि छुड़ाई बं
काटि पग फांसी॥ मैं धरूं तुम्हारो ध्यान द्वारिका वासी
अब काहे राज समाज करावत हांसी॥ अब करो कृपा य
नाथ जान चित चेरी। दुख हरो०॥ तुम पति राखी प्रहला
दीन दुख टारो। भये खम्भ फाड़ नरसिंह असुर संहारो
तुम खरदूषन पूतना बकासुर मारो। मथुरा मुष्टिक चाणूर कं
सँहारो॥ तुम मात पिता की जाय कटाई वेरी। दुख हरो०
भक्तन हित लै अवतार कन्हाई तुमने। नल कूवड़ की ज
योनि छुड़ाई तुमने॥ जल वरसत प्रभुता आय दिखाई तुमने
नख पर गिरवर धरि वृज लियो बचाई तुमने॥ प्रभु अ
बिलम्ब क्यों करो हमारी बेरी। दुख हरो०॥ बैठे सब रा

समाज नीति सब खोई। नहिं कहै धर्म की बात सभा में कोई॥ पांचो पति बैठे मौन कौन गति होई। लै नन्द नँदन को नाम द्रौपदी रोई॥ करि करि विलाप संताप सभा में टेरी। दुख हरो० ॥ सुनि दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी। भये आप चीर में प्रकट हरो दुख भारी॥ खैंचत हारो मतिमन्द वीर बलकारी। रख लिया दीन की लाज आप बनवारी॥ प्रभु धायो द्रौपदी हेत करी ना देरी। दुख हरो० ॥ यथा करी द्वारिकानाथ मनोहर माया। अम्बर का लगा पहाड़ पार नहिं पाया॥ तिहुं लोक चतुर्दश भुवन चीर दरशाया। बंदिश गणेश परसाद कृष्ण गुण गाया॥ दीनन के दीनानाथ विपद निरवेरी। दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी॥

दादरा–स्त्रियों के हित के लिये

चर्खा मेरी बहनों चलाया करो॥
अपने हाथों का खद्दर पिन्हाया करो॥ चर्खा० ॥
मिले घर के कामों से जब तुमको फुरसत।
चर्खे में दिन को बिताया करो॥ चर्खा० ॥
हुआ मुल्क कङ्गाल गफ़लत से अपना।
चर्खे से दौलत बढ़ाया करो॥ चर्खा० ॥
न तनजेब मखमल न साटन को पहिनो।
खद्दर की चद्दर बनाया करो॥ चर्खा० ॥
दिया हुक्म जो महात्मा गान्धी ने।
हमजोलियों को सिखाया करो॥ चर्खा० ॥
कहैं कृष्ण घर में विदेशी जो कपड़ा।
नहीं काम में उसको लाया करो॥ चर्खा० ॥

ग़ज़ल—जानकी का स्त्रियों को उपदेश

नेह चरणों में सदा पति के लगाना चाहिये।
नित्य सेवा से सदा पी को रिझाना चाहिये॥
देवता समझो पती को प्रेम से सेवा करो।
जन्म सेवा में सदा पति के बिताना चाहिये॥
जो पती बहिनों तुम्हारा चाहे कैसाही बुरा।
पर तुम्हारा धर्म है उसको निभाना चाहिये॥
जिस तरह था प्रेम सावित्री औ सत्यावान में।
प्रीति ऐसी ही तुम्हें बहिनों दिखाना चाहिये॥
शील का काजल लगा चूनर दया की ओढ़ कर।
तन पै विद्या के तुम्हें गहने सजाना चाहिये॥
द्रोपदी, तारामती, मीरा, अहिल्या, राधिका।
नार अपनी को तुम्हें इनसी बनाना चाहिये॥

ग़ज़ल-अत्रि मुनि का राम की बड़ाई करना

चरणों से वन तुम्हारे गुलज़ार हो रहे हैं।
छू छू चरण तुम्हारे गुलजार हो रहे हैं॥
नाचें हैं मोर कैसे फूले नहीं समाते।
कोयल चकोर पक्षी सरसार हो रहे हैं॥
गाते हैं गुन तुम्हारे वन के सभी पखेरू।

जिनके न पंख थे वे परदार हो रहे हैं ॥
दर्शन तुम्हारे वन में जिस रोज से हुये हैं।
जितने ऋषी मुनी हैं बलहार हो रहे हैं ॥
प्रह्लाद की तरह जितने हैं भक्त तेरे ।
मेरे गले का भगवन् वह हार हो रहे हैं ॥
रहते थे जो गुलों में "आनन्द" राम लछमन ।
कैसे दुखी बनों में सुकुमार हो हो रहे हैं ॥

ग़ज़ल

दयानिधि देश भारत को दया कर अब जगा दीजै ।
प्रशंसा युक्त था जैसा इसे वैसा बना दीजै ॥
जगत गुरु यह कहाता था बना कर इल्म हुनरों को ।
प्रभू है प्रार्थना मेरी वही दिन फिर दिखा दीजै ॥
यहां के जो निवासी बाल वृद्धा और नर नारी ।
सभी थे वेद अनुयायी वही मत फिर दिखा दीजै ॥
हमारा देश था धन धान्य से बिलकुल भरा पूरा ।
दया अपनी से हे भगवन् वही धन फिर लुटा दीजै ॥
रहें आनन्द से भारत निवासी और परबासी ।
यही है आरज़ू मेरी इसे पूरी करा दीजै ॥
पिता उपरोक्त आशायें हमारी पूर्ण कब होंगी ।
कहे "जगदीश" कर जोड़े हमें आशा बँधा दीजै ॥

———

गजल-गिरजाको प्रसन्न होकर जानकी को वर देना

सेवा बहुत करी है तुमने प्रिया हमारी ।
तुमको दिया जो माँगा वर जानकी दुलारी ॥
कोशलकिशोर मोहन रघुवीर मन वसे जो ।
चरणों में प्रीति होवे उनके सदा तुम्हारी ॥
पूजा करो सदा तुम उनहीं चरण कमल की ।
जिनने शिला अभागी गौतम की नार तारी ॥
कौशल में भी सभों की जीवन अधार होगी ।
मिथला निवासियों की जिस भांत प्राण प्यारी ॥
होवो सदा सुहागिन मिथलेश नन्दनी तुम ।
पूजा करें तुम्हारी भारत की सब कुमारी ॥
सोहैं गले में सुन्दर जैमाल राम ही के ।
हो जाय पहुड़ी सी हलका बचाव भारी ॥
"आनन्द" मन बसा जब वर जानकी ने पाया ।
लेकर सखी सहेली हँसती भवन सिधारी ॥

जानकी का विवाह होते वक्त राम को बचन देना

आपही के चन्द्रमुख का प्राणपति दर्शन करूं ।
नाथ पद पंकज तुम्हारे का सदा दर्शन करूं ॥
श्याम सूरत आपकी ही मेरी आंखों में बसे ।
आपके शुभ नाम का मैं रात दिन सुमरन करूं ॥
धूल चर्णों की बने सिंदूर मेरी मांग का ।
प्रेम फूलों का तुम्हारे नाथ आभूषण करूं ॥
प्राण से प्यारा तुम्हें समझूं सदा कौशल कुँवर ।
जो मिले आज्ञा तुम्हारी वह पती पालन करूं ॥
रोज चरणामृत को लूं रघुकुल मुकुट मैं आप का ।
आप को पहिले खिलालूं नाथ तब भोजन करूं ॥
नर्क में भी मुझ अभागी को ठिकाना ना मिले ।
स्वप्न में भी गर कपट मैं कौशला नन्दन करूं ॥
फूट जावें आंख देखूं पर पुरुष 'आनन्द' जो ।
आपही के श्याम मुख का दर्श रघुनन्दन करूं ॥

ग़ज़ल—गोपियों का ऊधो से कहना

न वो इक़रार आने का न वो इनकार करते हैं।
श्याम देखो अजी ऊधो हमें बेजार करते हैं॥
पड़े हम बेकलों को कल न यक पल चैन पड़ता है।
मुक़द्दर के लिखे को हम अब अपने आप भरते हैं॥
जुदे जिस दिन से मनमोहन हुये हैं हम से ऊधो जी।
उसी दिन से ही हम छोड़े हुये घरवार फिरते हैं॥
करी है प्रीति जिस दिन से मदन मोहन से ऊधो जी।
उसी दिन से हम अपना उन पै तन मन वार करते हैं॥
प्रीति में श्याम की सूरत ये मोहनलाल है अपनी।
परेशां हाल फिरते हैं न जीते हैं न मरते हैं॥

ग़ज़ल—गोपियों की

श्याम की यह अदा आली हमारे दिल को भाई है।
अदा जो रास लीला करके लीला में दिखाई है॥
मुकुट शिर पर वही हो और वही कानों में कुण्डल हों।
बांसुरी भी वही हो जो अधर धर के वजाई है॥
श्याम की सांवरी सूरत की मूरत है मेरी आली।
वही आंखों में और वोही मेरे दिल में समाई है॥

उसी यक्ष सांवरी सूरत पै तीनों लोक मोहित हैं।
गोपियों के भी तन की सुधि उसी ने ही भुलाई है॥
कोई कहता है मनमोहन कोई उसका मदनमोहन।
'गिरिन्दा' तो यह कहता है कि वो बृज का विहारी है॥

ग़ज़ल—गोपियों की

कोई कहता है मनमोहन कोई कहता मुरारी है।
कोई घनश्याम कहता है कोई कहता विहारी है॥
कोई कहता है धरनीधर कोई कहता है मुरलीधर।
कोई कहता है ये रक्षक मेरा बांका विहारी है॥
कोई कहता है गिरधारी कोई कहता है बनवारी।
कोई कहता है समदर्शी वो माखन चोर भारी है॥
कोई कहता है गोपाला कोई कहता है बृजबाला।
कोई कहता है मतवाला कृष्ण वह मुकुट धारी है॥
कोई शिव चरण कहता है 'गिरिन्दा' का है वो रक्षक।
कोई कहता है इनका क्या वह सब का छत्रधारी है॥

भजन—रामचन्द्र जी का बन को जाना

चले सिय राम लषन बन को । फकीरी कर धारन तन को ।
दो०—राम लषन बन को चले, पड़ा अवध में शोर ।
नर नारी व्याकुल भये, सो धीर धरै ना कोय ॥
खुशी भई कैकयी कपटिन को । चले सिय राम लषन०
दो०—आगे राम बीच में सीता, पीछे लछमन जांय ।
कोमल तन की जानकी, सो सुन्दर २ पांय ॥
बड़ी तकलीफ सिया जी को । चले सिय राम लषन०
दो०—दिन थोड़ा सा रह गया, जाना हमें ज़रूर ।
उतराई ले लीजिये, जो होवे मंज़ूर ॥
पार करदो निषाद हमको । चले सिय राम लषन०
दो०—हाथ तुम्हारे जोड़ कर, कहता हूं परनाम ।
चौदह वर्ष के बाद फिर, आन मिलोगे राम ॥
कोई समझावे रघुबर को । चले सिय राम लषन० ॥

॥ इति ॥

नवीन उपन्यास

सत्यवती मंझारानी

नाम की पुस्तक छप गई है और धड़ाधड़ बिक्री हो रही है। यह कोई मामूली उपन्यास नहीं है ऐसे तो आपने चन्द्रकान्ता वगैरह बहुत से किस्से पढ़े होंगे लेकिन इस किस्से में एक शिक्षा सम्बन्धी दिलचस्प सच्चा वाकिया दिखलाया गया है इस किस्से का सारांस केवल स्त्री शिक्षा है। हम अपने ग्राहक भाइयों से प्रार्थना करते हैं पुस्तक को तुरन्त खरीद लें वरना दूसरी बार छपने का इन्तजार देखना पड़ेगा मूल्य।) चार आना बाहर के ग्राहकों को।-) पांच आने का टिकट लिफ़ाफ़े में रखकर भेजना चाहिये। चार आने की पुस्तक वी० पी० द्वारा मँगाने से ग्राहकों को आठ आने में पड़ेगी इस वजह से टिकट भेजना ठीक है।

गाने की नई पुस्तक रागसाज संग्रह मू० ।)

सर्व प्रकार की पुस्तकों के मिलने का पता:-

लाला बाबूलाल बुकसेलर

मंदिर प्रयागनारायण कानपुर

पं० गोविंदप्रसाद द्वारा "गोविंद प्रेस,, लाठी मुहाल कानपुर में छपी.

९ - बाल स्वास्थ्य परिचय	श्री ज्योतिनारायण वर्मा	।।।)
१०—Boy's New Translation Primer	पं० राममहेश चौबे	१)
११—Boy's New Word Book & Translation	श्री रामसूरतलाल बी० ए०	।।=)
१२—कन्या कौमुदी ३री कला	श्री रामदास गौड़ एम० ए०	।।।)
१३—हिन्दी लिपि बोध ४था भाग	....	।)।।।
१४—ज्ञान प्रकाश I	पं० गुलाबचन्द्र उपाध्याय	।।।)

४थी कक्षा (Class IV)

१—बाल वाटिका ४था भाग या	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम० ए०	१।)
बाल साहित्य ३रा भाग	”	१)
२—बाल महाभारत	पं० रमाकान्त त्रिपाठी	१।=)
३—जवाहर लाल नेहरू	” ”	।।=)
४—नेताओं का बचपन	श्री व्यथित हृदय	१)
५—शिशु व्याकरण बोध	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम० ए०	।।।-)
६—हिन्दुस्तान का भूगोल	पं० जगदीशनारायण तिवारी	१।।।)
७—भूगोल प्रकृति विज्ञान II	पं० शिवदेव उपाध्याय	१।)
८—हमारे देश की कथा II	श्री अखिलेश्वर उपाध्याय	१)
९—सरल नागरिक शिक्षा II	प्रो० रूपनारायण उपाध्याय	।।)
१०—बाल स्वास्थ्य-परिचय	श्री ज्योतिनारायण वर्मा	।।।)
११—पत्र प्रभाकर	पं० रमाकान्त त्रिपाठी	।।)
१२—Boys' New Translation Primer	पं० राममहेश चौबे	१)
१३—Boys' Model Grammer	श्री रातसूरतलाल बी० ए०	।।।)
१४—बंगला शिक्षक	श्री कार्तिकेयचरण मुखो०	।।।)
१५—ज्ञान प्रकाश I	श्री गुलाबचन्द्र उपाध्याय	।।।)

५वीं कक्षा (Class V)

१—साहित्य सौरभ १ला भाग	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम० ए०	१।।)
२—सप्तसरोज	मुंशी प्रेमचन्दजी	।।।)
३—हिन्दी व्याकरण बोध	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम० ए०	१।।)

४—नव्य हिन्दी व्याकरण	गिरिजा शंकर मिश्र	१)
५—सचित्र भूगोल शिक्षा	पं० शिवदेव उपाध्याय 'सतीश'	१।=)
६—हमारे देश की कथा III	पं० उमापति त्रिवेदी एम. ए.	१।)
७—विज्ञान प्रकाश	पं० शिवदेव उपाध्याय 'सतीश'	१।)
८—स्वास्थ्य-शिक्षा	पं० शिवदेव उपाध्याय	१॥)
९—आरोग्य साधन	महात्मा गांधी	॥=)
१०—निबन्ध नवनीत I	'कमलेश'	१॥=)
११—Boys' New Translation I	श्री रामसूरतलाल बी. ए.	१॥।)
१२—Boys' Easy Grammar	ऐन एक्सपीरियन्स्ड हेडमा०	१।=)॥
१३—Book of Short Stories	पं० हरिहर त्रिपाठी बी. ए.	१)
१४—बंगला शिक्षक	श्री कार्तिकेयचरण मुखो०	॥।)
१५—ज्ञान प्रकाश II	श्री शिवदेव उपाध्याय	१)

६वीं कक्षा (Class VI)

१—साहित्य सुधा I या	पं० रामदहिन मिश्र	॥।–)॥
साहित्य सौरभ २रा भाग	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम. ए.	१।)
२—गल्प-गुच्छ I	पं० अखिलेश्वर उपाध्याय	॥≡)॥।
३—टालस्टाय की कहानियाँ	सम्पादक मुंशी प्रेमचन्दजी	२)
४—प्रेम चतुर्थी	मुन्शी प्रेमचन्दजी	१॥)
५—स्वदेशाभिमान में बलिदान	श्री हरिदास माणिक	॥।)
६—हिन्दी व्याकरण बोध	पं० भुवनेश्वर मिश्र एम. ए.	१॥)
७—भूगोल शिक्षा I	श्री वशिष्ठनारायण राय	१।)
८—भारतवर्ष का इतिहास	पं० उमापति त्रिवेदी	२॥)
९—प्रारम्भिक विज्ञान	श्री प्रसिद्धनारायण राय	॥।=)॥
१०—साहित्य मंजरी (बंगला)	,, व्रजनन्दन सिंह	॥।=)
११—वैज्ञानिक चमत्कार	पं० शिवदेव उपाध्याय 'सतीश' बी० ए० बी० एल०	१)
१२—स्वास्थ्य शिक्षा	पं० शिवदेव उपाध्याय	१॥)
१३—आरोग्य साधन	महात्मा गांधी	॥।=)
१४—व्यावहारिक पत्र बोध	श्री लक्ष्मणदास चतुर्वेदी	१)